بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 4 अक्तूबर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

ख़न्दक़ नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी ﷺ का बयान, तथा दुनिया के हालात एवं पाकिस्तान व बंगला देश के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 04.10.24
محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बों से आजकल अहज़ाब नामक युद्ध का वर्णन हो रहा है। इस युद्ध का और अधिक विवरण यूँ बयान हुआ है कि जब मुशरिकों को ख़न्दक़ (खाई) पार करने के बावजूद कोई सफलता नहीं मिली तथा अति अपमान का सामना करना पड़ा तो उन्होंने सहमति बना ली कि वे सब मिलकर हमला करेंगे। अतएव सुबह सवेरे सबने मिलकर खाई को घेर लिया, खाई को बार बार पार कर लेने के साथ साथ तीर चलाने का मुक़ाबला शुरु हुआ। काफ़िर लोग मुसलानों की ओर से किसी भूल चूक की प्रतीक्षा कर रहे थे, तथा ये हमले एवं प्रयत्न थोड़ी थोड़ी देर के बाद हाते रहे। इसी अवसर पर वहशी बिन हरब ने तुफ़ैल बिन नोमान अथवा तुफ़ैल बिन मालिक बिन नुअमान अन्सारी रज़ी. को अपना छोटा भाला मार कर शहीद कर दिया। हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ी. को भी तीर लगा और आप रज़ी. भी ज़ख़्मी हो गए तथा उसी घाव के कारण कुछ दिन बाद उनकी शहादत हो गई।

यही वह दिन था कि जिस दिन मुसलमानों के लिए घोर व्यस्तता, तथा हमलों के कारण नमाज़ भी अपने निश्चित समय पर पढ़ना मुशकिल हो गया। उस दिन मुसलमान नमाज़ें तो पढ़ते रहे परन्तु एक निरन्तर भय एवं कष्टदायक अवस्था में नमाज़ें अदा की गईं। असर के समय घोर हमले के कारण यह नमाज़ अन्तिम समय पर पढ़ी गई। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि उस समय तक क्यूँकि सलाते ख़ौफ़ (किसी भय की अवस्था में नमाज़) का निर्देश नहीं आया था इस लिए निरन्तर भय एवं व्यस्तता के कारण एक नमाज़ अर्थात असर की नमाज़ पढ़ने में देर हुई थी जो मग़रिब के साथ मिला कर पढ़ी गई तथा कुछ कथनों के अनुसार केवल ज़ोहर एवं असर की नमाज़ें ही अपने समय से हट कर पढ़ी गई थीं।

नमाज़ अपने निश्चित समय पर अदा न किए जाने के विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसका इतना दुःख हुआ कि आप स. ने फ़रमाया- ख़ुदा काफ़िरों को दंड दे, उन्होंने हमारी नमाज़ों में देर करवा दी। इससे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि के नैतिक आचरण पर बड़ी गहरी रोशनी पड़ती है और पता चलता है कि दुनिया में सर्वाधिक प्रिय बात आप स. के लिए ख़ुदा की इबादत थी।

हकम व अदल सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने उन समस्त रिवायतों को जिनमें समस्त नमाज़ों का रात के समय अदा किए जाने का वर्णन है, कमज़ोर रिवायतें कहा है। फ़रमाया कि किसी प्रमाणित हदीस में चार (नमाज़ें) जमा करने का वर्णन नहीं है। फ़त्हुल बारी शरह सही बुख़ारी में लिखा है कि घटना केवल यह हुई थी कि एक नमाज़ अर्थात असर की नमाज़ निश्चित समय के बाद देर से अदा की गई। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ सोमवार, मंगल तथा बुद्ध के दिन ज़ोहर एवं असर के बीच तशरीफ़ लाए तथा अपने ऊपर की चादर रख दी और हाथों को ऊपर उठाया तथा अहज़ाब पर बद्दुआ की। जाबिर रज़ी. कहते हैं कि हमने आप स. के चेहरे पर आने वाली ख़ुशी को पहचान लिया। एक रिवायत में है कि आप स. ने फ़रमाया- तुम दुश्मन से मुठभेड़ की इच्छा मत करो तथा ख़ुदा की शरण मांगो, परन्तु यदि तुम्हारी दुश्मन से मुठभेड़ हो जाए तो फिर धैर्य के साथ जमे रहो तथा जान लो जन्नत तलवारों के साए तले है। आप स. ने दुआ की- ऐ अल्लाह! ऐ किताब नाज़िल करने वाले! ऐ जल्दी हिसाब लेने वाले! तू सेनाओं को पराजित कर दे। ऐ अल्लाह! इनको पराजित कर दे तथा इनके मुक़ाबले के लिए हमारी सहायता कर। एक अन्य रिवायत में यह दुआ भी आई है कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरे एहद एवं वादे का वास्ता देता हूँ। ऐ अल्लाह! यदि तू चाहे तो यह इबादत न जाए।

अबू सईद ख़ुदरी रिवायत करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह ﷺ से निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ कलेजे मुंह को आ गए हैं, क्या हमारे कहने क लिए कोई कथन हैं? आप स. ने फ़रमाया कि हाँ, यह दुआ करो कि ऐ अल्लाह! हमारे ग़लतियों को छिपा दे तथा हमारे भय दूर फ़रमा दे।

युद्ध इसी प्रकार अपनी चरम सीमा पर था तथा मक्का के क़ुरैश एवं उनके दोस्त क़बीले अब निरन्तर घेराव रखने की स्थिति से तंग आ चुके थ तथा जल्दी से जल्दी अन्तिम निर्णायक हमला करके मुसलमानों

को नष्ट करना चाहते थे। काफ़िरों के सरदार यह युद्ध पद्यति तय्यार कर रहे थे, किन्तु दूसरी ओर ख़ुदा तआला उनकी रणनीति को धूल में मिलाने का फ़ैसला कर चुका था।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति नुईम बिन मसऊद जो ग़तफ़ान के क़बीले की अश्जा नामक शाखा से सम्बंध रखता था, जो इस युद्ध में मुसलमानों से लड़ रहे थे, परन्तु यह व्यक्ति दिल में मुसलमान हो चुका था, काफ़िर उसके इस्लाम क़बूल करने के विषय में अभी अवगत नहीं थे। अतएव उसने यह लाभ उठाया कि एक दिन यह मदीने पहुंच गया तथा सबसे पहल बनू क़ुरैज़ा के पास गया, चूँकि नुईम के बनू क़ुरैज़ा के मुख्याओं से पुराने सम्बंध थ अतः उसने बनू क़ुरैज़ा के मुख्याओं से कहा कि मेरे विचार से तुमने यह अच्छा नहीं किया कि मुहम्मद ﷺ के साथ विश्वासघात करके ग़तफ़ान तथा क़ुरैश के साथ मिल गए। वे दोनों तो यहाँ कुछ दिनों के मेहमान हैं किन्तु तुम लोगों ने तो यहाँ ही रहना है। याद रखो, कि क़ुरैश एवं ग़तफ़ान जाते हुए तुम्हें मुसलमानों की कृपा एवं दया पर छोड़ जांएगे, इस लिए कम से कम ऐसा करो कि क़ुरैश तथा ग़तफ़ान ज़मानत के रूप में अपने कुछ आदमी तुम्हारे साथ कर दें ताकि तुम्हें संतुष्टि रहे कि तुम्हारे साथ कोई विश्वासघात नहीं होगा। इसके बाद नुईम बिन मसऊद क़ुरैश के पास गया तथा उनको कहा कि बनू क़ुरैज़ा तुमसे भयभीत हैं तथा तुम्हारे कुछ लोगों को यर्ग़माल (बंधक) बनाने की योजना रखते हैं, परन्तु तुम कदाचित ऐसा मत करना। इसी प्रकार उसने बनू ग़तफ़ान से भी ऐसी बातें कीं। ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि उन्हीं दिनों में जब क़ुरैश एवं ग़तफ़ान यह योजना बना रहे थे कि मुसलमानों पर चारों दिशाओं से एक ही समय पर हमला किया जाए ताकि मुसलमान संख्या में कम होने के कारण इसका मुक़ाबला न कर सकें तथा कहीं न कहीं से उनकी लाईन टूट जाए तथा हमला करने वाले सरलता पूर्वक मदीने में दाख़िल हो सकें। इस योजना के अनुसार बनू क़ुरैज़ा को सन्देश भेजा गया तो उन्होंने जवाब भिजवाया कि कल तो हमारे सब्त (शनिवार की इबादत) का दिन है इस लिए हम विवश एवं व्यस्त हैं तथा वैसे भी जब तक आप लोग अपने कुछ लोगों को हमारे पास ज़मानत के रूप में नहीं ठहराएँगे, हम इस हमले में शामिल नहीं होंगे। इस बात के सामने आते ही दोनों ओर नुईम की बात की पुष्टि हो गई तथा दोनों पक्षों में भारी मतभेद उत्पन्न हो गया। बनू ग़तफ़ान तथा क़ुरैश ने सन्देश भेजा कि हम बंधक नहीं देते, तुमने आना है तो वैसे ही आओ। इस पर बनू क़ुरैज़ा को विश्वास हो गया कि ग़तफ़ान तथा क़ुरैश की नीयत साफ़ नहीं है और यूँ नुईम की स्कीम सफल हो गई।

फिर अल्लाह तआला की तक़दीर मुसलमानों के हक़ में एक दिन घोर आंधी के रूप में भी प्रकट हुई। उसका विवरण कुछ यूँ ह कि एक रात जब बड़ी ठंड थी अल्लाह तआला ने इस ज़ोर की आंधी भेजी कि जिसने काफ़िरों की हांडियों को पलट दिया तथा बर्तन उलट दिए। इस आंधी ने काफ़िरों की आंखें भर दीं, उनमें कमज़ोरी एवं कायरता भर दी और मुशरिक पराजित हो गए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. भयावह आंधी का विवरण बयान करने के बाद फ़रमाते हैं कि इन दृश्यों ने काफ़िरों के भ्रामक दिलों को जो पहले ही घेराव की कष्टदायक प्रतीक्षा तथा एकता के संगठन के पारस्परिक मतभेद के कड़वे अनुभव के कारण डावांडोल हो रहे थे, एक ऐसा धक्का लगाया कि फिर वे

संभल न सके तथा सुबह होने से पहले पहले मदीने का क्षतिज काफ़िरों की सेना से उड़ती हुई धूल से साफ़ हो गया।

जब आंधी का ज़ोर हुआ तो अबू सुफ़यान ने आस पास के क़ुरैशी सरदारों को बुला कर कहा कि हमारी कठिनाईयाँ अधिक होती जा रही हैं, अब यहाँ अधिक देर तक ठहरना उचित नहीं है इस लिए अच्छा है कि हम वापस चले जाएँ, और मैं तो बहरहाल जाता हूँ। यह कह कर उसने अपने आदमियों को वापसी का आदेश दिया तथा फिर ऊँट पर सवार हो गया, परन्तु घबराहट के कारण यह हाल था कि ऊँट के पाँव खोलने याद न रहे। सवार होने के बाद जब ऊँट आगे नहीं बढ़ा तो उसका ध्यान गया। उस समय इकरिमा बिन अबी जहल ने कुछ कटुपूर्ण शब्दों में कहा कि अबू सुफ़यान! तुम अमीरुल असकर हो तथा सेना को छोड़ कर भागे जा रहे हो, तुम्हें सेना की चिंता भी नहीं है। इस पर अबू सुफ़यान शर्मिन्दा हुआ तथा ऊँट से उतर कर कहा, लो! मैं नहीं जाता, किन्तु तुम लोग जल्दी जल्दी तय्यारी कर लो। इसके बाद जैसे जैसे अन्य क़बीलों को वापस जाने की सूचना मिलती गई उन्होंने भी तेज़ी से वापसी की तय्यारी शुरु कर दी। बनू क़ुरैज़ा भी अपने क़िलों में वापस चले गए तथा उनके साथ बनू नज़ीर का सरदार ह्यी बिन अख़तब भी उनके क़िलों में चला गया तथा प्रातः पौ फटने से पहले पूरा मैदान ख़ाली हो गया तथा एक तुरन्त आश्चर्य जनक बदलाव के फ़लस्वरूप मुसलमान पराजित होते होते विजयी हो गए।

जब रसूलुल्लाह ﷺ को काफ़िरों के पराजित होने की सूचना मिली तो आप स. ने ख़ुदा का आभार प्रकट किया तथा फ़रमाया कि यह हमारी किसी चेष्टा का परिणाम नहीं बल्कि केवल ख़ुदा तआला की कृपा के कारण है जिसने अपने दम से अहज़ाब को पराजित कर दिया। इसके बाद काफ़िरों के भागने की ख़बर मुसलमानों में प्रसिद्ध हो गई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- शेष विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा।

दुनिया के मौजूदा हालात के लिए दुआ की ओर ध्यान दिलाते हुए हुज़ूर पुरनूर ने फ़रमाया कि दुनिया के हालात, जैसा कि पता है आपको, दिन प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं, विनाश की ओर जा रहे हैं। अमरीका तथा महा शक्तियाँ न्याय से काम लेना नहीं चाहतीं, युद्ध फैलता चला जा रहा है। अल्लाह तआला अहमदियों तथा निर्दोष लोगों को इसके भयानक एवं बुरे प्रभाव से बचाए। इसके लिए हमें अल्लाह तआला से सम्बंध बढ़ाने होंगे तथा दुआओं की ओर अत्यधिक ध्यान देना होगा। इस बात की ओर हर एक अहमदी को ध्यान देना चाहिए। पाकिस्तान में अहमदियों की स्थिति भी अधिक ख़राब हो रही है, उनके लिए भी दुआ करें। बंगला देश के अहमदियों के हालात के लिए भी दुआ करें, उन लोगों की भी बड़ी कष्टदायक स्थिति है। अल्लाह तआला सब पर रहम एवं फ़ज़्ल फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131